

रविवार 11 मई, 2025

विषय— आदम और पतित आदमी

स्वर्ण पाठ: प्रेरितों के काम 3 : 25

"तुम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी हो, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बाप दादों से बान्धी, जब उस ने इब्राहीम से कहा, कि तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएंगे। "

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 89 : 1-3, 15, 16, 34, 37

- 1 मैं यहोवा की सारी करुणा के विषय सदा गाता रहूंगा।
- 2 तू स्वर्ग में अपनी सच्चाई को स्थिर रखेगा।
- 3 मैं ने अपने चुने हुए से वाचा बान्धी है।
- 15 क्या ही धन्य है वह समाज जो आनन्द के ललकार को पहिचानता है; हे यहोवा, वे लोग तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं।
- 16 वे तेरे नाम के हेतु दिन भर मगन रहते हैं, और तेरे धर्म के कारण महान हो जाते हैं।
- 34 मैं अपनी वाचा न तोड़ूंगा, और जो मेरे मुंह से निकल चुका है, उसे न बदलूंगा।
- 37 वह चन्द्रमा की नाई, और आकाश मण्डल के विश्वास योग्य साक्षी की नाई सदा बना रहेगा।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 1 : 1, 26 (से:)

- 1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
- 26 फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।

2. उत्पत्ति 2 : 1, 6, 7, 21, 22, 25

- 1 यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया।

- ⁶ तौभी कोहरा पृथ्वी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी
⁷ और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया।
²¹ तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नीन्द में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकाल कर उसकी सन्ती मांस भर दिया।
²² और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया।
²⁵ और आदम और उसकी पत्नी दोनों नंगे थे, पर लजाते न थे॥

3. उत्पत्ति 3 : 23

- ²³ तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की बाटिका में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया गया था।

4. यशायाह 2 : 11, 12, 22

- ¹¹ क्योंकि आदमियों की घमण्ड भरी आंखें नीची की जाएंगी और मनुष्यों का घमण्ड दूर किया जाएगा; और उस दिन केवल यहोवा ही ऊंचे पर विराजमान रहेगा॥
¹² क्योंकि सेनाओं के यहोवा का दिन सब घमण्डियों और ऊंची गर्दन वालों पर और उन्नति से फूलने वालों पर आएगा; और वे झुकाए जाएंगे॥
²² सो तुम मनुष्य से परे रहो जिसकी श्वास उसके नथनों में है, क्योंकि उसका मूल्य है ही क्या?

5. व्यवस्थाविवरण 4 : 29, 31

- ²⁹ परन्तु वहां भी यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढोगे, तो वह तुम को मिल जाएगा, शर्त यह है कि तुम अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से उसे ढूंढो।
³¹ क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु ईश्वर है, वह तुम को न तो छोड़ेगा और न नष्ट करेगा, और जो वाचा उसने तेरे पितरों से शपथ खाकर बान्धी है उसको नहीं भूलेगा।

6. व्यवस्थाविवरण 29 : 10 (से;), 12, 13

- ¹⁰ आज के दिन तुम सब अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खड़े रहो।
¹² कि जो वाचा तेरा परमेश्वर यहोवा आज तुझ से बान्धता है, और जो शपथ वह आज तुझ को खिलाता है, उस में तू साझी हो जाए।

- 13 इसलिये कि उस वचन के अनुसार जो उसने तुझ को दिया, और उस शपथ के अनुसार जो उसने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब, तेरे पूर्वजों से खाई थी, वह आज तुझ को अपनी प्रजा ठहराए, और आप तेरा परमेश्वर ठहरे।

7. 1 शमूएल 1 : 1 (से 3rd.), 2, 6, 8-11 (से 8th.), 17, 18, 19 (और एल्काना), 20, 24 (से 2nd.), 25 (और लाया)-28

- 1 एप्रेम के पहाड़ी देश के रामतैम सोपीम नाम नगर का निवासी एल्काना नाम पुरुष था, वह एप्रेमी था।
2 और उसके दो पत्नियां थीं; एक का तो नाम हन्ना और दूसरी का पनिन्ना था। और पनिन्ना के तो बालक हुए, परन्तु हन्ना के कोई बालक न हुआ।
6 परन्तु उसकी सौत इस कारण से, कि यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी, उसे अत्यन्त चिढ़ाकर कुढ़ाती रहती थीं।
8 इसलिये उसके पति एल्काना ने उस से कहा, हे हन्ना, तू क्यों रोती है? और खाना क्यों नहीं खाती? और मेरा मन क्यों उदास है? क्या तेरे लिये मैं दस बेटों से भी अच्छा नहीं हूँ?
9 तब शीलो में खाने और पीने के बाद हन्ना उठी। और यहोवा के मन्दिर के चौखट के एक अलंग के पास एली याजक कुर्सी पर बैठा हुआ था।
10 और यह मन में व्याकुल हो कर यहोवा से प्रार्थना करने और बिलख बिलखकर रोने लगी।
11 और उसने यह मन्त्रत मानी, कि हे सेनाओं के यहोवा, यदि तू अपनी दासी के दुःख पर सचमुच दृष्टि करे, और मेरी सुधि ले, और अपनी दासी को भूल न जाए, और अपनी दासी को पुत्र दे, तो मैं उसे उसके जीवन भर के लिये यहोवा को अर्पण करूंगी।
17 एली ने कहा, कुशल से चली जा; इस्राएल का परमेश्वर तुझे मन चाहा वर दे।
18 उसे ने कहा, तेरी दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाए। तब वह स्त्री चली गई और खाना खाया, और उसका मुंह फिर उदास न रहा।
19 ... और एल्काना अपनी स्त्री हन्ना के पास गया, और यहोवा ने उसकी सुधि ली;
20 तब हन्ना गर्भवती हुई और समय पर उसके एक पुत्र हुआ, और उसका नाम शमूएल रखा, क्योंकि वह कहने लगी, मैं ने यहोवा से मांगकर इसे पाया है।
24 जब उसने उसका दूध छुड़ाया तब वह उसको संग ले गई।
25 ... करके बालक को एली के पास पहुंचा दिया।
26 तब हन्ना ने कहा, हे मेरे प्रभु, तेरे जीवन की शपथ, हे मेरे प्रभु, मैं वही स्त्री हूँ जो तेरे पास यहीं खड़ी हो कर यहोवा से प्रार्थना करती थी।
27 यह वही बालक है जिसके लिये मैं ने प्रार्थना की थी; और यहोवा ने मुझे मुंह मांगा वर दिया है।
28 इसी लिये मैं भी उसे यहोवा को अर्पण कर देती हूँ; कि यह अपने जीवन भर यहोवा ही का बना रहे। तब उसने वहीं यहोवा को दण्डवत किया॥

8. यशायाह 51 : 1 (से 3rd), 4, 5, 7, 8 (परन्तु)

- 1 हेधर्म पर चलने वालो, हे यहोवा के ढूंढने वालो, कान लगाकर मेरी सुनो; जिस चट्टान में से तुम खोदे गए और जिस खानि में से तुम निकाले गए, उस पर ध्यान करो।
- 4 हे मेरी प्रजा के लोगो, मेरी ओर ध्यान धरो; हे मेरे लोगो, कान लगाकर मेरी सुनो; क्योंकि मेरी ओर से व्यवस्था दी जाएगी, और मैं अपना नियम देश देश के लोगों की ज्योति होने के लिये स्थिर करूंगा।
- 5 मेरा छुटकारा निकट है; मेरा उद्धार प्रगट हुआ है; मैं अपने भुजबल से देश देश के लोगों का न्याय करूंगा। द्वीप मेरी बाट जाहेंगे और मेरे भुजबल पर आशा रखेंगे।
- 7 हे धर्म के जानने वालो, जिनके मन में मेरी व्यवस्था है, तुम कान लगाकर मेरी सुनो; मनुष्यों की नामधराई से मत डरो, और उनके निन्दा करने से विस्मित न हो।
- 8 ... परन्तु मेरा धर्म अनन्तकाल तक, और मेरा उद्धार पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 592 : 16-17

माँ - ईश्वर; दिव्य और शाश्वत सिद्धांत; जीवन, सत्य और प्रेम।

2. 63 : 5 (में)-11

विज्ञान में मनुष्य आत्मा की संतान है। सुंदर, अच्छा और शुद्ध उसके वंश का गठन करते हैं। उसका मूल, नश्वर की तरह, पाशविक वृत्ति में नहीं है, और न ही वह बुद्धि तक पहुँचने से पहले भौतिक परिस्थितियों से गुजरता है। आत्मा उसका मूल और होने का परम स्रोत है; परमेश्वर उसका पिता है, और जीवन उसके होने का नियम है।

3. 396 : 26-30

यह स्पष्ट रूप से ध्यान में रखें कि मनुष्य ईश्वर की संतान है, मनुष्य की नहीं; मनुष्य आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं; आत्मा आत्मा है, पदार्थ से बाहर, पदार्थ के अन्दर कभी नहीं, शरीर को कभी जीवन और संवेदना नहीं देती।

4. 264 : 32-9

आत्मा का ब्रह्माण्ड आध्यात्मिक प्राणियों से भरा हुआ है, और इसका शासन दिव्य विज्ञान है। मनुष्य निम्नतम नहीं, अपितु उच्चतम मानसिक गुणों की संतान है। मनुष्य आध्यात्मिक अस्तित्व को उसी अनुपात में समझता है जैसा कि सत्य और प्रेम के खजाने हैं। मनुष्यों को ईश्वर के प्रति समर्पण करना चाहिए, उनका स्नेह और उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए, - उन्हें होने की व्यापक व्याख्याओं के पास होना चाहिए, और अनंत के कुछ उचित अर्थों को प्राप्त करना चाहिए, - ताकि पाप और मृत्यु दर को दूर किया जा सके।

5. 256 : 2-8, 28-1

क्रिया के उच्चतर स्तर की ओर बढ़ते हुए, विचार भौतिक इंद्रिय से आध्यात्मिक की ओर, शैक्षणिक से प्रेरणात्मक की ओर, तथा नश्वर से अमर की ओर बढ़ता है। सभी चीजें आध्यात्मिक रूप से निर्मित हैं। मन ही सृष्टिकर्ता है, पदार्थ नहीं। प्रेम, दिव्य सिद्धांत, मनुष्य सहित ब्रह्मांड का पिता और माता है।

एक असीम मन भौतिक सीमाओं से आगे नहीं बढ़ सकता। परिमितता अनन्तता का विचार या विशालता प्रस्तुत नहीं कर सकती। एक परिमित या भौतिक स्रोत से उत्पन्न मन सीमित और स्थिर होना चाहिए। अनंत मन ही सृष्टिकर्ता है और सृष्टि इस मन से निकलने वाली अनंत छवि या विचार है।

6. 289 : 27-2

जीवन पदार्थ में नहीं है। इसलिए इसे पदार्थ से बाहर जाना नहीं कहा जा सकता। पदार्थ और मृत्यु नश्वर भ्रम हैं। आत्मा और सभी आध्यात्मिक चीजें वास्तविक और शाश्वत हैं।

मनुष्य मांस की संतान नहीं है, बल्कि आत्मा की, - जीवन की, पदार्थ की नहीं। क्योंकि जीवन ईश्वर है, जीवन को शाश्वत, स्वयंभू होना चाहिए। जीवन वह चिरस्थायी “मैं हूँ” है, वह अस्तित्व जो था और है और रहेगा, जिसे कोई मिटा नहीं सकता।

7. 61 : 4-13

मानव के हित में अच्छाई बुराई पर अध्यात्म और पशु पर आधिपत्य होना चाहिए, या सुख कभी नहीं जीता जाएगा। इस खगोलीय स्थिति की प्राप्ति हमारे पूर्वजन्म को कम करेगी, अपराध को कम करेगी, और महत्वाकांक्षा को उच्च लक्ष्य देगी। पाप की हर घाटी को ऊंचा किया जाना चाहिए, और स्वार्थ के हर पहाड़ को नीचे लाया जाना चाहिए, ताकि विज्ञान में हमारे भगवान का राजमार्ग तैयार हो सके। स्वर्गीय सोच वाले माता-पिता की संतानों को अधिक बुद्धि, बेहतर संतुलित मन और मजबूत शारीरिक संरचना विरासत में मिलती है।

8. 64 : 29-6

ईमानदारी और सदाचार विवाह अनुबंध की स्थिरता सुनिश्चित करते हैं। आत्मा अंततः अपना दावा करेगी, - जो वास्तव में है, - और भौतिक इंद्रियों की आवाजें हमेशा के लिए शांत हो जाएंगी।

अनुभव को सद्गुण की पाठशाला होना चाहिए, और मानवीय खुशी मनुष्य की सर्वोच्च प्रकृति से निकलनी चाहिए। मसीह, सत्य, प्रत्येक विवाह वेदी पर उपस्थित होकर जल को मदिरा में परिवर्तित करें तथा मानव जीवन को प्रेरणा प्रदान करें, जिससे मनुष्य के आध्यात्मिक और शाश्वत अस्तित्व को समझा जा सके।

9. 69 : 13-26

आध्यात्मिक रूप से यह समझने के लिए कि एक रचनाकार है, ईश्वर, सारी सृष्टि को उजागर करता है, शास्त्रों की पुष्टि करता है, बिना किसी पक्षपात के, बिना किसी पीड़ा के, और मनुष्य की मृत्यु और सही और शाश्वत का मधुर आश्वासन लाता है।

यदि ईसाई वैज्ञानिक अपनी संतानों को आध्यात्मिक रूप से शिक्षित करते हैं, तो वे दूसरों को भी आध्यात्मिक रूप से शिक्षित कर सकते हैं और इससे परमेश्वर की सृष्टि की वैज्ञानिक समझ के साथ कोई टकराव नहीं होगा। किसी दिन बच्चा अपने माता-पिता से पूछेगा: "क्या आप पहली आज्ञा का पालन करते हैं? क्या आपका ईश्वर और निर्माता एक है, या मनुष्य ही निर्माता है?" यदि पिता उत्तर दे, "परमेश्वर मनुष्य के द्वारा मनुष्य की रचना करता है," बच्चा पूछ सकता है, "क्या आप यह सिखाते हैं कि आत्मा भौतिक रूप से सृजन करती है, या आप यह घोषणा करते हैं कि आत्मा अनंत है, इसलिए पदार्थ का प्रश्न ही नहीं उठता?"

10. 62 : 4-7, 16-19, 27-28

बच्चों की सम्पूर्ण शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे उनमें नैतिक और आध्यात्मिक नियमों के पालन की आदतें विकसित हो सकें, जिससे बच्चा तथाकथित भौतिक नियमों में विश्वास को पूरा कर सके और उस पर विजय प्राप्त कर सके, जो एक ऐसी मान्यता है जो रोग को जन्म देती है।

बच्चों को ज्ञान में बच्चे ही बने रहने दिया जाना चाहिए, तथा उन्हें मनुष्य की उच्चतर प्रकृति की समझ में वृद्धि के माध्यम से ही पुरुष और महिला बनना चाहिए।

मनुष्य की उच्चतर प्रकृति निम्न द्वारा शासित नहीं होती; यदि ऐसा होता, तो ज्ञान का क्रम उलट जाता।

11. 57 : 23-24

प्रेम प्रकृति को समृद्ध करता है, बड़ा करता है, शुद्ध करता है और उसे उन्नत करता है।

12. 68 : 4-8, 30-10

कभी-कभी हम सीखेंगे कि आत्मा, महान वास्तुकार, ने विज्ञान में पुरुषों और महिलाओं को कैसे बनाया है। हमें क्षणभंगुर और झूठ से तौबा करना चाहिए और ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए जो हमारे सर्वोच्च स्वार्थ में बाधक हो।

मानव पीढ़ी के रूप में आनुपातिक रूप से बंद हो जाता है, शाश्वत के सामंजस्यपूर्ण लिंक, आध्यात्मिक रूप से विवेकी होंगे; और मनुष्य, पृथ्वी के पृथ्वी पर नहीं बल्कि परमेश्वर के साथ सह-अस्तित्व में दिखाई देगा। मनुष्य और ब्रह्मांड का वैज्ञानिक तथ्य आत्मा से विकसित होता है, और इसलिए आध्यात्मिक हैं, जैसा कि दिव्य विज्ञान में तय किया गया है, इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य केवल स्वास्थ्य की भावना प्राप्त करते हैं क्योंकि वे पाप और बीमारी की भावना को खो देते हैं। मनुष्य कभी भी यह नहीं मान सकता कि मनुष्य एक निर्माता है। पहले से ही बनाए गए भगवान के बच्चों को पहचान लिया जाएगा क्योंकि मनुष्य होने का सत्य पाता है। इस प्रकार यह है कि असली, आदर्श आदमी अनुपात में प्रकट होता है क्योंकि झूठ और सामग्री गायब हो जाती है।

13. 476 : 28-32

जब यीशु ने परमेश्वर के बच्चों की बात की, न कि पुरुषों के बच्चों की, तो उन्होंने कहा, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है;" इसका मतलब है, सत्य और प्रेम वास्तविक मनुष्य में राज्य करता है, यह दर्शाता है कि भगवान की छवि में आदमी बेदाग और शाश्वत है।

14. 582 : 28-29

बच्चे: आध्यात्मिक विचार और जीवन, सत्य और प्रेम के प्रतिनिधि।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वान्नी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6